प्रातः क्लास 3-5-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। डबल ओमशान्ति कहें तो भी राईट है। बच्चों को अर्थ तो समझा दिया है। मैं हूं आत्मा। और शान्ति स्वरूप। जबमेरा धर्म है ही शान्त तो फिर जंगलों में आद में भटकने से शान्ति नहीं मिल सकती है। बाप कहते हैं मैं भी शान्त स्वरूपहूं। यह तोबहुत ही सहज है। हरेक बात बहुत सहज है। परन्तु माया के लड़ाई होने कारण थोड़ा डिफीकल्ट होता है। यह भी बच्चे जानते हैं सिवाय बेहद के बाप के यह ज्ञान कोई दे न सके। ज्ञानसागर एक ही बाप है। देहधारी को कब ज्ञान सागर नहीं कहा जा सकता। रचयिता ही रचना के आदि मध्य अन्त का ज्ञान देते हैं। वह तुम बच्चों को मिल रहा है। कई अच्छे2 अन्यन्य बच्चे भी भूल जाते हैं। क्यों कि पारे मिशल है बाप की याद। स्कूल में तो जरूर नम्बरवन होंगे ना। नम्बर हमेशा स्कूल के गिने जाते हैं। सत्संग में कब नम्बर नहीं गिना जाता। यह स्कूल है। इसको समझने में भी बुधि चाहिए। आधा कल्प होती है भक्ति। फिर भक्ति के बाद ज्ञान सागर आते हैं। ज्ञान देते हैं। भक्ति मार्ग वाले कब ज्ञान दे न सके। क्योंकि सभी देहधारी है ना। ऐसे थोड़े ही कहेंगे शिव बाबा भक्ति करते हैं। वह किसकी भक्ति करेंगे। एक ही बाप है जिसको देह नहीं है। वह किसकी भक्ति नहीं करते। बाकी जो भी देहधारी है वह भक्ति करेंगे। क्योंकिरचना है ना। रचयिता है एक बाप। बाकी इन आंखों से जो कुछ देखा जाता है चित्र आद वह सभी हैं रचना। यह सभी बातें थोड़ी2 भूल जाते हैं। बाप समझते रहते हैं तुमको बेहद का वर्सा बाप बिगर तो मिल न सके। बैकुण्ठ की बादशाहीतुमकोमिलती है। इनकी राजाई भारत में थी। 5000वर्ष पहले इन्हों की राजधानी 2500वर्ष सूर्यवंशी चन्द्रवंशी की राजाई चली। तुम बच्चे जानते हो यह तो कल की बात है। सिवाय बाप के और कोई बता न सके। पतितपावन भी वह बाप ही है। समझाने में भी बड़ी मेहनत लगती है। बाप खुद कहते हैं कोटों में कोऊ ही समझेंगे। यह चक्र भी तो समझाया गया है। तुम गवर्नर आद के बड़ों 2 के बंगले तक जाकर समझाते हो। चित्र आद दिखाते हो। छिपा/कर थोड़े ही रखा है। यह तो सारी दुनिया के लिए नालेज है। कोई2 अहंकारी मनुष्य कहते हैं यह तुम क्यों लिखा है। और यह तो सभी बड़े2 आदमी देखते हैं सभी इस नालेज को अच्छा समझते हैं। अच्छा मानते हैं। सीढ़ी भी बिलकुल कायदे सिर है। फिर गुरगुर करते रहते हैं। बाबाने समझाया था शादी के लिए जो हाल बनाते हैं उन्हों को समझा कर दृष्टि दो। आगे चल कर सभी को बाबा की बातें पसन्द आवेंगी। समझाना तो बच्चों को है। बाकी किसको बाबा के पास ले आना बेवकूफी-पना है। बाबा तो कोई से मिलते ही नहीं। परन्तु बच्चे उनको कह देते हैं चलो बाबा के पास तुमको ले बाबासमझावेंगे। बाबा तो समझते हैं जंगल से एप्स को ले आते हैं उनको हम क्या समझावेंगे। शिव-भगवानुवाच बच्चे तुमको पता है इस जनावरों के जंगल में सब से बड़ा जनावर बेसमझ कौन है? शंकराचार्य। साफ बताते हैं ना। बाबा ने समझाया था जो पुजारी है उसकोपूज्य नहीं कहा जा सकता। खुद ही शिव का पुजारी है। उनकोपूज्य कैसे कहा जा सकता। फिर उनके कितने फालाअर्स होते हैं। चाकरी करते हैं। पतित की बैठ पूजा करते हैं। बाबा ने कहा भी था तुम लिख सकते हो पुजारी को पूज्य कह नहीं सकते। अपना घमंण्ड कितना है कि हम पूज्य हैं। कलियुग में एक भी पूज्य हो न सके। इम्पासिबुल है। पूज्य की स्थापना ही ऊंच ते ऊंच जो पूज्य हैं वही करते हैं। आधा कल्प है पूज्य फिर आधा कल्प है पुजारी ही पुजारी होते हैं। इस बाबा ने भी ढेर गुरु किया। अभीसमझते हैं गुरु करना तो भक्ति मार्ग था। अभी सदगुरु मिला है जो सभी को पूज्य बनाते हैं। सिर्फ एक को नहीं। सभी को बनाते हैं। आत्मा सभी की सतोप्रधानपूज्य बन जाती है। अभी तो तमोप्रधान पुजारी है। यहबहुत पायन्दयस समझने की है। बाप कहते हैं सतयुग में कब भी कोई पुजारी हो न सके। कलियुग में एक भी पूज्य हो न सके। सन्यासियों के लिए भीसमझाया है वह कोई पवित्र थोड़े ही हैं। बिख सेपैदा हो पुनर्जन्म लेते रहते हैं। परन्तु वह है पूज्य। क्यों किवहां रावण राज्य है नहीं। रामराज्य रावण राज्य अक्षर कहते हैं परन्तु रामराज्य कब रावण राज्य कब होता है यह कुछ भी पता नहीं है।

जैसे मेढकों मिशल टूं-टूं करते रहते हैं। मेढकों की बड़ी सभा होती है ना। वन्डर है ना। खुशी में जैसे खाना खाते हैं। मनुष्यों की अवस्था भी मेढकों मिशल है। अर्थ कुछ नहीं समझते। देखने में भल मनुष्य आते हैं परन्तु जब तक मेढकपना, जंगलीपना न दिखावे तब तक सुख न आये। जैसे मेढक बकते रहते हैं यह एक जैसे टेव पड़ गई है। कितनी पंचायती है। फलानी सभा, फलानी सभा। कहां से 10 कहां से 20 जाती मिला तो एक को भेड़ उनके पास चले जावेंगे। कितनी कचड़ कचड़ पट्टी है। भक्ति मार्ग में गाया जाता है पत्थर बुधि। तुम अभी पारस बुधि बन रहे हो। बाकी सभी है पत्थर बुधि। फिर उसमें कोई 2% कोई 5% है। बाप ने समझाया है यह राजधानी स्थापन हो रही है। 2ड वाले पिछाड़ी में आकर कुछ न कुछ खाकर खुश बनेंगे। अभी ऊपर से भी आकर खुश बच्चे आते रहते हैं। सरकस में कितने अच्छे2 एक्टर्स होते हैं। फिर कोई हर के सच्चे एक्टर्स भी होते हैं। यह है बेहद की बात। बच्चों को कितना अच्छी रीत समझाया जाता है। यहां तुम बच्चे आते ही हो रिफ्रेश होने। हवा खाने लिए नहीं आते हो। कई तो और ही उपाधी (हंगामा) मचाते आते हैं। कुछ भी जानते ही नहीं। कैसे याद करें किसको याद करे। ब्राहमण तो है नहीं। पत्थर बुधि को ले आते हैं। तो वह दुनियावी वायब्रेशन रहता है। यहां तो बाप जोर से पकड़ कर खड़ा रहते हैं। के बाहर में तुमको कौन पकड़े। बाप तो यहां बैठे हैं। श्रीमत द्वारा तुम माया पर जीत पाते हो। माया घड़ी2 तुम्हारी बुधि को भगा देती है। यहां तो बाप कशिश करते हैं। खींचते हैं। बाप कब भी उल्टी बात नहीं करेंगे। बाप तो सत्य है ना। तुम यहां सत के संग में बैठे हो। दूसरे सभी असतसंग है। उनको सतसंग कहना ही बड़ी भारी भूल है। तुम जानते हो सत्य एक ही बाप है। शंकराचार्य भी एक सत की पूजा करते हैं। उनको यह पता नहीं कि हम किसकी पूजा करते हैं। फिर उनको क्या कहेंगे। कितनी अन्धश्रधा है। लाखों मनुष्य उनके पीछे जाते हैं। जैसे खोजों का गुरु आगा खां है अभी वह क्या करते हैं, कितने उनके फ्लाअर्स हैं। उन्हों को हर महिने देना होता है वह अलग। और फिर जब यहां आते हैं तो बहुत भेट उनको मिलती है। हीरों में वजन करते हैं। नहीं तो हीरों में बजन कब किया नहीं जाता। सतयुग में हीरे जवाहर तो तुम्हारे लिए जैसे पत्थर भित्तर है। जो मकानों में लगाते हैं। यहां कोई थोड़े ही होंगा जिसको हीरों का दान मिले। कितने पैसे हैं। पापात्मा पापात्मओं को ही देते हैं। उन से पाप करते हैं तो देने वाले पर भी चढ़ता है। अजामिल जैसे पापी बन जाते हैं। बहुत गन्द करते हैं। दूसरे धर्म वाले का जाकर बनते हैं। उनको बेसमझ कहेंगे ना। यह भगवान बैठ समझाते हैं। न कि मनुष्य। इसलिए बाबा ने कहा था तुम्हारे जो चित्र हैं उन पर हमेशा लिखा हुआ हो भगवानुवाच। बाबा तो एक बार कहेंगे ऐसे करो। दस बार तो नहीं कहेंगे। हमेशा लिखो त्रिमूर्ति शिव भगवानुवाच। सिर्फ शिव भगवान से भी मनुष्य मुड़ेंगे। भगवान तो है निराकार। इसलिए त्रिमूर्ति शिव भगवानुवाच। त्रिमूर्ति के चित्र भी है सिर्फ उसमें शिव बाबा नहीं हैं। ब्रहमा विष्णु शंकर तीनों का नाम कहा जाता है। ब्रहमा देवताए नमः। अभी सतयुग में तो ब्रहमा देवता कब नाम सुना है क्या। ब्रहमा देवताएनमः फिर उनको गुरु भी कहते शिव शंकर कहदेते। अभी शंकर बापू कैसे ज्ञान देंगे। किसके भी बुधि में नहीं आता कि वह बापू फिर यहां कहांसे आया। शंकर बापू और भाभी पार्वती। ताई कहो चाची कहो। एक तो कहते हैं शंकर बापू फिदा हुआ। उनके वीर्य से बिच्छू टिण्डण पैदा हुये। अभी ऐसा है शंकर बापू। वह फिर ज्ञान कहां से लावेंगा। कैसे2 बातें तुम सुनते आये हो। सच्ची अमर कथा यह है। बाप कहते हैं तुम सभी पावीतयां हो। बाप तुम सभी को आत्मा समझ बच्चे को ज्ञान देते हैं। भक्ति करते हैं इसलिए संसारं कहा जाता है। भक्ति का फल भगवान देते हैं। कहते हैं मैं राम हूं। यहां तो तुम बच्चों को समझाया जाता है एक शिव बाबा है। ईश्वर भगवान आद भी नहीं। शिव बाबा अक्षर बहुत ही मीठा है। बाप खुद कहते हैं मीठे2 बच्चों। तो बाबा हुआ ना। बाप समझाते हैं आत्मा में ही सभी संस्कार भरे जाते हैं। आत्मा निर्लेप नहीं। निर्लेप होती है तो पतित क्यों बनती। जरूर लेप-छेप लगता है।

तब तो पतित बनती है। कहते भी हैं भ्रष्टाचारी। वह है श्रेष्ठाचारी। फर्क है ना। जो श्रेष्ठाचारी है उन्हीं को ही महिमा गाते हैं। आप ऐसे2 हो। हम नीच पापी... हैं। इसलिए अपने को देवता कह नहीं सकते। अभी बाप बैठ मनुष्य को देवता बनाते हैं। महिमा तो है ना। नानक के ग्रन्थ में भी महिमा है। सिख लो खुद मरनते हैं सदगुरु अकाल। जो अकाल मूर्त है वही सच्चा सदगुरु है। तो उस एक को ही मानना चाहिए ना। कहते एक हैं, करते फिर दूसरे हैं। बहुत जोर से कहते हैं सदगुरु अकाल। अर्थ कुछ भी नहीं जानते। अभी बाप जो सदगुरु अकाल है वह बैठ समझाते हैं तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं जो समझते हैं। सम्मुख बैठे तो भी कुछ सुनते हैं। कई तो यहां यहांसे बाहर निकले और फिर खलास। यहां ही बह जाता है। बाबा मना करते हैं कब भी संसारी बातें आपस में मुई संग मुईकी मत करो। मत सुनो। कोई तो बहुत खुशी से ऐसी बातें सुनते और सुनाते हैं। बाप की महावाक्य भूल जाते हैं। वास्तव में जो अच्छे बच्चे हैं, सर्विस को डियुटी तो बजानी ही है। डियुटी पूरी हुई फिर अपने मस्ती में। धंधा आदि में कहां झूठ आदि बोलते हैं-पाप होते हैं वह तो कुछ भी नहीं है। कड़े ते कड़ा पाप है काम कटारी का। उन पर जीत पानी है। बाकी झूठ आदि बोलना व्यापारी लोग तो धंधे में झूठ आदि बोलते हैं ही हैं। फिर ईश्वर अर्थ दो पैसे, तीन पैसे एक आना भी निकालते हैं समझते हैं पाप भी किये हैं ईश्वर अर्थ कर देते हैं तो पाप मिट जाये। आफिसर लोग ऐसे नहीं निकाल सकते। शिव बाबा कहते हैं मैं भी बड़ा व्यापारी हूं। तुम भी व्यापारी हो। सरकारी नौकरी वाले मेरे अर्थ नहीं निकालते। बाप ने समझाया है कृष्ण और क्रिश्चन का बड़ा अच्छा सम्बन्ध है। कृष्ण की राजाई होती है ना। ल०ना० बाद में नाम पड़ता है। बैकुण्ठ कहने से ही झट कृष्ण याद आवेगा। बैकुण्ठ स्वर्ग याद आने से कृष्ण ही बुद्धि में आता है। ल०ना० भी याद नहीं आते। क्यों कि कृष्ण तो छोटा बच्चा है ना। छोटे बच्चे पवित्र होते हैं। तुमने यह मीसा० किया है कैसे बच्चे जन्म लेते हैं। नर्स आगे खड़ी रहती है। झट उठाया और सम्भाला। कृष्ण के लिए कितनी बातें लिख दी है। मटकियां फोड़ना यह करना यह सभी किसका काम है? बाप ने कहा है हरेक बात युक्तियों से होती है। हां शिव बाबा की जादूगिरी थी। उसमें इतने सारे पैसे आये। बच्चों को बहलाने लिए यह सभी होते थे। कब्रस्तान बनाते थे। यह सभी पार्ट था सो बन्द हो गया। बचपन, युवा वृद्ध का पार्ट अनग2 बजता है ना। जो हुआ ड्रामा। उन में कुछ भी संकल्प नहीं चलता। यह तो ड्रामा बना हुआ है ना। हमारा पार्ट बज रहा है ड्रामा के प्लेन अनुसार। माया की भी प्रवेशता होती है। और बाप की प्रवेशता होती है। कोई बाप के मत पर चलते हैं कोई रावण के मत पर। रावण क्या चीज है कब देखा है क्या? सिर्फ चित्र देखते हो। शिव बाबा का तो फिर रूप है। रावण का क्या रूप है। 5 विकार भूत आकर प्रवेश करते हैं तो रावण कहा जाता है। यह है भूतों की दुनिया असुरों की दुनिया। तुम बच्चे समझते हो हमारी आत्मा अभी सुधरती जाती है। यहां तो शरीर भी आसुरी है आत्मा सुधरती2 पावन बन जावेगी तो फिर यह खाल उतार देंगे। फिर सतोप्रधान खाल मिल जावेगी कनचन काया मिलेगी। सो तब जब आत्मा भी कनचन हो। सोना कनचन हो तो जेवर भी कनचन बनेंगे। सोने में खाद भी डालते हैं ना। अभी तुम बच्चों को रचयिता और रचना को नालेज बुद्धि में चक्र लगाती रहती है। मनुष्य तो कुछ भी नहीं जानते। कहते हैं ऋषि मुनि भी नेती2 कहते गये। हम कहते हैं ल०ना० से पूछो तो ये भी नेती2 कहेंगे। परन्तु इन से पूछा नहीं जाता। कौन पूछेंगे। पूछा जाता है सिख गुरु लोग से। यह गाया जाता है ऋषि मुनि रचयिता और रचना की आदि मध्य अन्त को नहीं जानते थे। गोया सिद्ध करते हैं हम नास्तिक लोग हैं। फिर तुम उनकी महिमा क्यों करते हो। उनके आगे माथा क्यों टकते हो। अभी तुम पूछ सकते हो तुम समझाने लिए कितना माथा मारते हो। गला हो खराब हो जाता है। बाबा भी गला खराब करेंगे क्या। बाप तो बच्चों को सुनावेंगे। जिन्हों ने समझा है। बाकी और के साथ फालतू थोड़े ही माथा लगावेंगे। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का याद प्यार गुडमार्निंग